कृत्रिम बुद्धिमत्ता का मानव जीवन पर प्रभाव: ज़िम्मेदारी, नैतिकता और मानवीय अस्तित्व का समकालीन विमर्श

मंजुश्री मैनन

प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, एम.ई.एस कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, बैंगलोर.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18790595

ABSTRACT:

कृत्रिम बुद्धिमत्ता समकालीन सभ्यता की एक युगांतकारी तकनीकी उपलब्धि है, जो मानव जीवन की निर्णय-प्रक्रिया और कार्य-संस्कृति को गहराई से पुनर्संरचित कर रही है। शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के क्षेत्रों में इसके सकारात्मक प्रभावों के साथ-साथ नैतिक उत्तरदायित्व के विघटन और मानवीय संवेदनाओं के मानकीकरण जैसी चुनौतियाँ भी उभरी हैं। तकनीक का उद्देश्य मानव श्रम को प्रतिस्थापित करना नहीं, अपितु क्षमता-विस्तार और कौशल-उन्नयन होना चाहिए। भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सार्थकता मशीन और मानवीय विवेक के संतुलित सहअस्तित्व में निहित है, जहाँ तकनीक साध्य नहीं, बल्कि मानव कल्याण का साधन मात्र रहे।

KEYWORDS:

कृत्रिम बुद्धिमत्ता, नैतिक ज़िम्मेदारी, मानवीय संवेदना, कौशल पुनर्गठन, सहअस्तित्व.

प्रस्तावना

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की अवधारणा समकालीन मानव सभ्यता की सबसे प्रभावशाली तकनीकी उपलब्धियों में से एक है, जिसका आशय ऐसी प्रणालियों से है जो मानव की तरह सीखने, तर्क करने और निर्णय में सहायता करने की क्षमता रखती हैं। "जॉन मैकार्थी" कृत्रिम बुद्धिमत्ता के जनक माने जाते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव निर्णय-प्रक्रिया को प्रतिस्थापित नहीं अपितु उसे पुनर्संरचित करती है, जहाँ अंतिम उत्तर मशीन नहीं बल्कि मानव विवेक देता है। इसके प्रभावों का अध्ययन सिर्फ तकनीकी नहीं वरन दार्शनिक और सामाजिक दृष्टि से भी आवश्यक हो गया है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का मानव जीवन पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव:

यह धारणा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव रचनात्मकता को सीमित कर देगी, एकांगी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता नए माध्यमों का सृजन अवश्य करती है परन्तु उसकी रचनात्मकता के पीछे सदैव मानव का हाथ रहता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने मानव श्रम को अप्रासंगिक नहीं बनाया है बल्कि उसने श्रम के स्वरूप को बदला है, उसके मूल्य को समाप्त नहीं किया है। भारतीय समाज में यह परिवर्तन शारीरिक श्रम से बौद्धिक, सृजनात्मक और विश्लेषणात्मक श्रम की ओर संकेत करता है। "इससे कौशल-पुनर्गठन की आवश्यकता उत्पन्न होती है, जो सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण पक्ष है।"[1] भारत की सामाजिक संरचना में कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने परंपरागत ज्ञान एवं आधुनिक तकनीक के मध्य एक सेतु का निर्माण किया है। विज्ञान, कृषि, आयुर्वेद जैसे कई क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता लाभदायक ही सिद्ध हुई है। उससे मानव श्रम एवं समय की बचत होती है। इस पर आधारित तकनीकें मनुष्य की स्मरण-शक्ति को कमज़ोर नहीं करतीं, अपितु स्मृति-प्रबंधन की नई संस्कृति को विकसित करती हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने शिक्षा को सूचना-आधारित प्रणाली से निकालकर अनुभव-आधारित अधिगम बना दिया है। यह शिक्षक का स्थान नहीं लेती अपितु उसके वर्चस्व को और भी अधिक उभारकर सामने लाती है। शिक्षक का स्वरूप सिर्फ ज्ञानदाता का नहीं रह जाता, अपितु वह मार्गदर्शक एवं मूल्य-निर्माता बनकर सामने आता है। अनुकूली शिक्षण प्रणालियाँ विद्यार्थियों की व्यक्तिगत क्षमताओं, रुचियों और अधिगम-गति के अनुसार पाठ्य सामग्री प्रस्तुत करती हैं, जिससे शिक्षा अधिक प्रभावी और छात्र-केंद्रित बनती है। भारतीय शिक्षा-व्यवस्था में

विविध भाषाएँ, सामाजिक विषमताएँ और संसाधनों की असमान उपलब्धता भारत की शिक्षा प्रणाली की मुख्य चुनौतियाँ रही हैं। इस पर आधारित डिजिटल मंच इन चुनौतियों को कम करने की क्षमता रखते हैं, विशेषकर तब, जब वे स्थानीय भाषाओं और संदर्भों के अनुरूप विकसित किए जाएँ।

स्वास्थ्य-सेवा के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीकी सहायता उपलब्ध करा सकती है, किन्तु मानवीय संवेदना की जगह नहीं ले सकती, परन्तु वह मानवीय संवेदना को संरक्षित करने का अवसर प्रदान करती है, यदि उसका उपयोग नैतिक रूप से किया जाए। भारतीय ज्ञान-परंपरा में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता को साध्य के रूप में नहीं, अपितु साधन के रूप में देखा जा सकता है। यह मानव-केन्द्रित विकास की अवधारणा को पुनर्जीवित करती है, जहाँ तकनीक का उद्देश्य मानव कल्याण होता है। भविष्य को ध्यान में रखकर यदि देखा जाए तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता स्वास्थ्य सेवा, आपदा प्रबंधन, पर्यावरण-संरक्षण और प्रशासन में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकती है। "भारत में 'समावेशी नवाचार' की अवधारणा कृत्रिम बुद्धिमत्ता को स्थानीय आवश्यकताओं और सांस्कृतिक संदर्भों से जोड़ने पर बल देती है।"[2] "इसके लिए पारदर्शी नीति-ढाँचे, डिजिटल साक्षरता और कौशल-उन्नयन अनिवार्य हैं।"[3]

पारंपरिक समाज में निर्णय और उसके परिणाम की ज़िम्मेदारी स्पष्ट रूप से मनुष्य पर होती है, लेकिन कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आगमन के साथ यह ज़िम्मेदारी कई स्तरों में विभाजित हो गई है। "डेटा एकत्र करने वाला, एल्गोरिदम विकसित करने वाला, प्रणाली लागू करने वाला और अंतिम निर्णय लेने वाला- यह सभी पृथक-पृथक इकाइयाँ बन गई हैं। इस स्थिति को मानव ज़िम्मेदारी का विघटन कहा जा सकता है, जहाँ उत्तरदायित्व स्पष्ट न रहकर बिखर जाता है।"[4]

रोज़गार एवं आर्थिक जीवन पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव अत्यंत जटिल तथा बहुआयामी है। एक तरफ स्वचालन के तहत हम पारंपरिक रोज़गारों में कटौती को होते देखते हैं तो दूसरी तरफ कौशल-आधारित नवीन द्वार रोज़गार के लिए खुल रहे हैं। डेटा विज्ञान, मशीन लर्निंग, साइबर सुरक्षा और रचनात्मक उद्योगों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने नए अवसर सृजित किए हैं। "भारतीय संदर्भ में यह परिवर्तन विशेष चिंता का विषय है, क्योंकि यहाँ श्रम-प्रधान क्षेत्रों पर बड़ी जनसंख्या निर्भर करती है, ऐसे में यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग केवल उत्पादन और लाभ वृद्धि हेतु किया जाएगा, तो यह सामाजिक असमानता और

बेरोज़गारी को बढ़ा सकता है। इसलिए अमर्त्य सेन का "क्षमता-दृष्टिकोण" यहाँ अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है, जिसके अनुसार विकास का उद्देश्य मानव क्षमताओं का विस्तार होना चाहिए।"[5]

मनुष्य अपनी त्रुटियों से, अनुभवों से परिपक्वता हासिल करता है, सीखता है और सुदृढ़ बनता है किन्तु कृत्रिम बुद्धिमत्ता त्रुटियों की संभावनाओं को लगभग ना के बराबर कर देती है। नेविगेशन, अध्ययन तथा निर्णय - हर क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता पहले से ही काम आसान कर देती है और हर समस्या के लिए समाधान उपलब्ध करा देती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव को निर्णय लेने में सहायता प्रदान करती है, परन्तु लगातार कृत्रिम बुद्धिमत्ता के सुझावों पर निर्भर करना, मनुष्य के नैतिक विवेक को निष्क्रिय बना सकती है। इसके प्रभाव से व्यक्ति क्रमशः आलस्य की चपेट में आकर नैतिक निर्णय लेने के अभ्यास से दूर होने लगता है। "कृत्रिम बुद्धिमत्ता भावनाओं को डेटा के रूप में विश्लेषित करती है अर्थात खुशी, क्रोध, ग़म, डर जैसी सभी भावनाएँ एल्गोरिदमिक पैटर्न बन जाते हैं। इसकी वजह से मानवीय संवेदना की विशिष्टता और गहराई कम होती है और भावनाएँ भी डेटा-पॉइंट्स बन सकती हैं। यही संवेदना का मानकीकरण कहलाता है।"[6]

मनुष्य जीवन में "मौन" का स्थान सोचने, प्रतीक्षा करने एवं आत्ममंथन के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है, परन्तु कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने हर खाली क्षण को सूचना एवं सुझावों से ऐसे भर दिया है कि इससे मनुष्य के आंतरिक संवाद और आत्मचिंतन की क्षमता प्रभावित होने लगी है। समाज में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव केवल सूचना तक सीमित नहीं है, अपितु यह मानवीय संबंधों की प्रकृति को भी प्रभावित कर रहा है। डिजिटल संवाद के बढ़ते प्रयोग से प्रत्यक्ष मानवीय संपर्क में कमी देखी जा रही है। "यह स्थिति खासकर युवा पीढ़ी में अधिक स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है जहाँ आभासी संवाद वास्तविक संबंधों का स्थान लेने लगा है।"[7] इसके अतिरिक्त कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित निगरानी प्रणालियाँ पूरे समाज में सुरक्षा एवं नियंत्रण के नवीन रूप प्रस्तुत कर रही हैं। हिंसात्मक गतिविधियों के नियंत्रण एवं प्रशासनिक दक्षता हेतु इनका सार्थक उपयोग किया जा सकता है, किन्तु व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर इसके प्रभाव को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव समाज के विभिन्न वर्गों पर समान रूप से नहीं पड़ता। स्त्रियाँ, युवा और ग्रामीण समुदाय इस तकनीकी परिवर्तन को अलग-अलग ढंग से अनुभव करते हैं। "डिजिटल प्लैटफॉर्म स्त्रियों को शिक्षा और रोज़गार

के नए अवसर प्रदान करते हैं, परन्तु साथ ही साइबर उत्पीड़न और निजता-ह्रास की समस्याएँ भी बढ़ती हैं।”[8]

युवा वर्ग कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर आधारित तकनीक का सबसे बड़ा उपभोक्ता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर आधारित डिजिटल जीवन-शैली ने युवाओं की सोच, संबंधों और आकांक्षाओं को गहराई से प्रभावित किया है। ग्रामीण क्षेत्रों में, यदि डिजिटल अवसंरचना और प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाए तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता कृषि, स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव केवल शिक्षा और सामाजिक संरचना तक सीमित नहीं है, अपितु यह मानव संस्कृति, भाषा और रचनात्मक अभिव्यक्तियों को भी गहराई से प्रभावित कर रहा है। संस्कृति मानव समाज की आत्मा होती है तथा भाषा उसका सबसे सशक्त माध्यम। कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर आधारित तकनीकों ने भाषा प्रयोग, साहित्य-सृजन, अनुवाद और सांस्कृतिक अभिलेखन के नए आयाम खोल दिए हैं। आज मशीनें कविता-कहानियों और संगीत को रचने में सक्षम प्रतीत होती हैं, परन्तु विचार करने योग्य यह है कि क्या इस प्रकार से रचित रचनाएँ मानवीय अनुभूति और संवेदना की गहराई को व्यक्त कर सकती हैं? “भाषा के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का एक सकारात्मक पक्ष यह है कि यह भाषाई विविधता के संरक्षण में सहायक सिद्ध हो सकता है।”[9] भारत जैसी बहुभाषी संस्कृति में, जहाँ अनेक भाषाएँ लुप्तप्राय स्थिति में हैं, ऐसे में कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर आधारित अनुवाद एवं डिजिटलीकरण उपकरण भाषाओं के संरक्षण और प्रसार में अपना अभूतपूर्व योगदान दे सकते हैं।

भारतीय काव्य शास्त्र में रचना को ‘रसानुभूति’ से जोड़ा गया है, जहाँ कवि की अनुभूति और पाठक का भावात्मक संप्रेषण केंद्रीय तत्व होता है, किन्तु कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा निर्मित रचनाएँ आँकड़ों और पैटर्न पर आधारित होती हैं। उनमें अनुभूति का अभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। इस दृष्टिकोण से यदि हम देखें तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता रचनात्मकता का विकल्प नहीं, अपितु एक सहायक उपकरण के रूप में अधिक उपयुक्त प्रतीत होती है।

भारतीय दार्शनिक परंपरा में ‘कर्म’, ‘धर्म’ और ‘विवेक’ को नैतिक निर्णय का आधार माना गया है। यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता को इन मूल्यों के आलोक में विकसित किया जाए और मानवीय नियंत्रण को केंद्रीय स्थान दिया जाए, तो तकनीक और नैतिकता के बीच संतुलन संभव है। भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता को शिक्षा, स्वास्थ्य और कृषि में सामाजिक परिवर्तन

के साधन के रूप में अपनाया गया है, परन्तु तकनीकी साक्षरता और नैतिक नियंत्रण के बिना यह सामाजिक असमानता को और गहरा कर सकती है।

निष्कर्ष:

समग्र रूप से प्रस्तुत शोधालेख इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव जीवन को गहराई से प्रभावित करने वाली एक शक्तिशाली तकनीक है। यह ना तो अपने-आप में पूर्णतः कल्याणकारी है और ना ही विनाशकारी। उसका स्वरूप मानव द्वारा निर्धारित मूल्यों, उद्देश्यों और नैतिक नियंत्रण पर निर्भर करता है। यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता को मानवता के विकल्प के रूप में नहीं, अपितु मानव क्षमताओं के संवर्धक के रूप में विकसित किया जाए, तो यह शिक्षा, समाज, संस्कृति और अर्थव्यवस्था को अधिक न्यायपूर्ण, समावेशी और अर्थपूर्ण बना सकती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव जीवन में सुविधा, गति और दक्षता तो ला सकती है, परन्तु विवेक, नैतिकता और उत्तरदायित्व का स्थान नहीं ले सकती। दोनों अन्योन्याश्रित हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का भविष्य मनुष्य के साथ सहअस्तित्व में निहित है, ना कि उसके स्थानापन्न के रूप में।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. बी. के. मातिलाल, Ethics and Epistemology, Oxford University Press, New Delhi, 2002, Pg. 73-76.
2. NITI Aayog, National Strategy for Artificial Intelligence, GOI, 2018, Pg. 41.
3. World Economic Forum, AI Governance, Geneva, 2020, Pg. 19.
4. नीति आयोग, भारत सरकार, National Strategy for Artificial Intelligence # AI for All, नई दिल्ली, 2018, Pg. 14-19.
5. Sen, Amartya, Development as Freedom, Oxford UP, 1999, Pg. 87.
6. शोशाना, जुबाफ, The Age of Surveillance Capitalism, पब्लिक अफेयर्स, न्यूयॉर्क, 2019, Pg. 215-230.
7. Twenge, Jean, iGen, Atria, 2017, Pg. 101.
8. Citron, Danielle, Hate Crimes in Cyberspace, Harvard UP, 2014, Pg. 92.
9. UNESCO, Digital Preservation of Languages, Paris, 2019, Pg. 22.